RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-01
January-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

# लातूर जिले के विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन कबड्डी खिलाड़ियों की मनोवृत्तियों का अध्ययन

होगाडे संतोष गुरूनाथ

शोधार्थी, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझनूं, राजस्थान

**प्रस्तावना** –

कबड्डी एक खेल है, जो मुख्य रूप से भारतीय उपमहाद्वीप में खेली जाती है। कबड्डी नाम का प्रयोग प्रायः उत्तर भारत में किया जाता है, इस खेल को दक्षिण में चेडुगुडु और पूरब में हु तू तू के नाम से भी जानते हैं। यह खेल भारत के पड़ौसी देश नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका और पाकिस्तान में भी उतना ही लोकप्रिय है। कबड्डी बांग्लादेश का राष्ट्रीय खेल है।

साधारण शब्दों में इसे ज्यादा अंक हासिल करने के लिए दो टीमों के बीच की एक स्पर्धा कहा जा सकता है। अंक पाने के लिए एक टीम रेडर विपक्षी पाले में जाकर वहां मौजूद खिलाड़ियों को छूने का प्रयास करता है। इस दौरान विपक्षी टीम के स्टापर अपने पाले में आए रेडर को पकड़कर वापस जाने से रोकते हैं और अगर वह इस प्रयास में सफल होते हैं तो उनकी टीम को इसके बदले एक अंक मिलता है और अगर रेडर किसी स्टापर को छूकर सफलतापूर्वक अपने पाले में चला जाता है तो उसकी टीम के एक अंक मिल जाता है और जिस स्टापर को उसने छुआ है उसे नियमतः कोर्ट से बाहर जाना पड़ता है।

इसका कोर्ट डॉज बॉल गेम जितना बड़ा होता है। कोर्ट का माप 13 मीटर गुणा 10 मीटर होता है। कोर्ट के बीचों बीच एक लाइन खिंची होती हैं जो इसे दो हिस्सों में बांटती है। कबड्डी महासंघ के हिसाब से कोर्ट का मॉप 13 मीटर गुणा 10 मीटर होता है।

खिलाड़ियों के पाले में आने के बाद टॉस जीतने वाली टीम सबसे पहले अपना खिलाड़ी विपक्षी पाले में भेजती है। यह रेडर कबड्डी–कबड्डी बोलते हुए जाता है और विपक्षी खिलाड़ियों को छूने का प्रयास करता है। इस दौरान वह इस बात का पूरा ख्याल रखता है उसकी सांस ना टूटे। सांस टूटने की स्थिति में उसे भागकर अपने पाले में लौटटता होता है औश्र जब तक वह सांस रोके रखकर कबड्डी–कबड्डी बोल सकता है, वह अपनी चपलता का उपयोग कर विपक्षी खिलाड़ियों को छूने का प्रयास कर सकता है। इस प्रकिया में अगर वह विपक्षी टीम के किसी भी स्टापर को छूने में सफल होता है तो उस स्टापर को मरा हुआ समझ लिया जाता है। ऐसे में उस स्टापर को कोर्ट से बाहर जाना पड़ता है और अगर स्टापरों को छूने की प्रकिया में रेडर अगर स्टापरों की गिरफत में आ जाता है तो उसे मरा हुआ मान लिया जाता है। यह प्रकिया दोनों टीमों की ओर से बारी–बारी चलती रहती है। इस तरह से हर दल का खिलाड़ी बारी–बारी से क्रम बदलते रहते हैं और अंत में जिसके दल में सबसे ज्यादा सदस्य बचे रह जाते हैं उस दल को विजेता घोशित कर दिया जाता है।

यह खेल आमतौर पर 20.20 मिनट के दो हिस्सों में खेला जाता है। हर हिस्से में टीमें पाला बदलती है और इसके लिए उन्हें पांच मिनट का ब्रेक मिलता है। हालांकि, आयोजन इसके एक हिस्से की अवधि 10 या 15 मिनट की भी कर सकते हैं। हर टीम में 5.6 स्टापर व 4.5 रेडर होते हैं। एक बार में सिर्फ चार स्टापरों को ही कोर्ट पर उतरने की इजाजत होती है। जब भी स्टापर किसी रेडरको अपने पाले से बाहर जाने से रोकते हैं। उन्हें एक अंक मिलता है लेकिन अगर रेडर उन्हें छूकर भागने में सफल रहता है तो उसकी टीम को अंक मिल जाता है।

इसमें यदि आप दूसरे दल के जगह पर जाते हो तो आपको कबड्डी–कबड्डी बोलने रहना पड़ेगा जब तक की आप वापस अपने जगह तक रेखा को छूते या पार करते हुए नहीं जाता हो। अन्य दल के लोग आपको पकड़ने की कोशिश भी करेंगे और आपसे बचने की भी। इसलिए आपको उनसे दूरी भी बनानी चाहिए क्योंकि वे आपको तब तक पकड़े रहेंगे जब तक आप कबड्डी–कबड्डी बोलना न छोड़ दें। यदि आपने यह शब्द बोलना छोड़ दिया तो आप खेल से बाहर हो जाओगे।

खेल बालक के जीवन की सर्वाधिक सुखद अनुभूति है। शारीरिक अंगो में स्फूर्ति और चंचलता, हृदय में आनन्द और प्रसन्नता तथा मन में उत्साह के भाव हमारी जीवन शक्ति को बढ़ा देता है। वास्तव में खेलकूद द्वारा ही बालकों के सर्वांगीण व्यक्तित्व का विकास होता है। खेल का केवल शारीरिक महत्व नहीं है वरन् शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक तथा बौद्धिक महत्व भी है।

बालकों का खेल एक स्वाभाविक (Spontaneous) क्रिया है जो आत्म–प्रेरित (Self-motivated) होती है और आनन्ददायक भी होती है। बालकों के जीवन में दो क्षेत्र हैं,

RRIJM 2015, All Rights Reserved

प्रथम खेल तथा दूसरा कार्य (Work) होता है। बाल्यावस्था तक बालकों का सम्बन्ध प्रमुख रूप से खेल से रहता है। इसके बाद कार्य उनके लिये महत्वपूर्ण होता जाता है। आधुनिक युग में खेल के महत्व को शिक्षाशास्त्रियों एवं विद्यालय प्रशासन ने भी स्वीकार किया है। इसी कारण विभिन्न कक्षाओं के पाठ्यक्रम में खेल, ड्रामा, आर्ट और संगीत जैसे विषयों को महत्व दिया जा रहा है।

आधुनिक समय में सबसे प्रचलित खेलों में से एक कबड्डी खेल में बालकों को अपने विभिन्न संवेगों को अनुभव करने का अवसर प्राप्त होता है तथा वह दूसरे बालकों अथवा बड़े लोगों की संवेगात्मक अभिव्यक्तियों को देखकर अनुकरण के आधार पर संवेगों का प्रकाशन करना सीखता है तथा साथ ही साथ संवेगात्मक नियन्त्रण (Emotional Control) भी सीखता है। इसके अतिरिक्त बालक जितना ही अधिक दूसरे बालकों के सम्पर्क में आता है, उसका उतना ही समाजीकरण होता है। अतः कबड्डी के माध्यम से बालक अनेक सामाजिक मूल्यों को सीखता है जैसे– सहयोग, सहानुभूति, सहनशीलता आदि सीखता है जिनसे उसे समाज के साथ अनुरूपता स्थापित करने में सहायता मिलती है। कबड्डी में बालक नेतृत्व (Leadership), प्रभुत्व (Dominance), प्रतियोगिता (Competition) आदि विशेषताओं को भी सीखता है। किन परिस्थितियों में उसे समूह में ख्याति (Popularity) मिलती है और किन परिस्थितियों में उसे समूह से निष्कासित किया जाता है, यह सभी तथ्य वह कबड्डी के द्वारा सीखता है।

**अध्ययन का महत्व :–**

कबड्डी एक स्वाभाविक प्रक्रिया है जो मानव अनादिकाल से करता आया है। बाल, युवा सभी किसी न किसी रूप में कबड्डी खेलते हैं। यद्यपि शारीरिक दृष्टि से सभी प्रकार के खेलों को शारीरिक क्रिया कह सकते हैं, तथापि उनके विविध प्रकारों को देखकर यह दिखता है कि इन भेदों का एक विशेष कारण है, वह कारण है 'मन'। मनुष्य अपनी मानसिक स्थिति के अनुसार अपने को अभिव्यक्त करने के लिये भिन्न–भिन्न रूपों में शारीरिक क्रियाएं करता है। इन क्रियाओं या खेलों की विशेष बात यह है कि इन्हें मनुष्य किसी हेतु से या किसी पूर्व नियोजन से नहीं करता है। ये सारी क्रियाएँ स्वान्तः सुखाय होती हैं, ये क्रियायें नियमादि बन्धनों से मुक्त होती हैं। इस प्रकार खेल मुख्यरूपेण हेतुरहित, वैयक्तिक स्वरूप, स्वान्त सुखाय और नियमादि बन्धनों से मुक्त होता है। दौड़ कूद प्रायः सांघिक और हेतुपूर्ण होते हैं और उनमें व्यक्ति को नियमादि का पालन करने का एक अप्रत्यक्ष बन्धन होता है। खेलकूद की भिन्नताओं के कारण भी उनका अलग ही महत्व है। कबड्डी में अनेक व्यक्ति समाविष्ट होने के कारण सहभागी व्यक्तियों को सहकार्य, सामाजिक लेनदेन, नियमपालन, आज्ञाकारिता, ध्येयनिष्ठा, कुछ सीमा तक स्वार्थत्याग, पदाधिकार–विचार, स्वकर्तव्यनिष्ठा आदि अनेक उपयोगी गुणों के अनुभव स्वतः हो जाते हैं, क्योंकि इन गुणों या इन अनुभवों के बिना कबड्डी में आनन्द प्राप्त हो ही नहीं सकता। अतः कबड्डी द्वारा ये गुण अपने आप शनैः शनैः पनपने लगते हैं और इसी के परिणाम स्वरूप व्यक्ति में सामाजिकता के गुण पनपते हैं। कबड्डी में आत्माभिव्यक्ति के अवसर तो मिलते ही है, साथ ही सामाजिक गुणों की प्राप्ति होने के अवसर भी मिलते हैं।

इस प्रकार समस्त तथ्यों पर गहराई से विचार करने के बाद एवं देश के विकास के लिए कबड्डी खेल की आवश्यकता को महत्वपूर्ण मानने के बाद शोधकर्ता द्वारा ''लातूर जिले के विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन कबड्डी खिलाड़ियों की मनोवृत्तियों का अध्ययन'' विषय को अपने अध्ययन हेतु चुना गया है। उक्त अध्ययन के निष्कर्षों से शारीरिक शिक्षा एवं खेल जगत की भावी आयोजनाओं के लिए अनेक आधारभूत बिन्दु मील के पत्थर सिद्ध होंगे, जिनकी अनुभूति एवं निर्देशन में विशिष्ट शैक्षिक लक्ष्यों व सफलताओं की प्राप्ति के अनेक मार्ग खुलने की सम्भावना बनती है।

**अध्ययन का औचित्य :–**

पूर्ववर्ती अनुसंधायकों के अध्ययनों का अवलोकन करने से यह स्पष्ट होता है कि कुछ अनुसंधायकों ने समस्या में लिये गये किसी एक चर पर अध्ययन किया है तथा कुछ अनुसंधायकों ने किसी दूसरे चर पर अध्ययन किया है। शोधकर्ता ने अध्ययन हेतु जिस समस्या का चयन किया है उस पर कोई भी अनुसंधान अभी तक प्रकाश में नहीं आया है यह पक्ष अछूता रह गया है इसलिए शोधकर्ता ने अपने अध्ययन हेतु समस्या का शीर्षक ''लातूर जिले के विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन कबड्डी खिलाड़ियों की मनोवृत्तियों का अध्ययन'' चयनित किया है और इस पर अध्ययन करने का निश्चय किया। अनुसंधानकर्ता की मान्यता है कि प्रस्तुत शोध के जो परिणाम एवं निष्कर्ष प्राप्त होंगे वे निश्चित रूप से शारीरिक शिक्षा जगत एवं कबड्डी खेल में अपना आंशिक योगदान अवश्य देंगे।

**समस्या कथन :–**

**''लातूर जिले के विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन कबड्डी खिलाड़ियों की मनोवृत्तियों का अध्ययन''**

**अध्ययन के उद्देश्य :–**

1- विद्यालयीन एवं महाविद्यालयी कबड्डी खिलाड़ियों की मनोवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**अध्ययन की परिकल्पनाएँ :–**

1- विद्यालयीन एवं महाविद्यालयी कबड्डी खिलाड़ियों की मनोवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved 

**परिसीमन :-**

यह शोध कबड्डी खेल की दिशा में अग्रसर है अतः इसका क्षेत्र कबड्डी खेल के तक ही सीमित है। विषय वस्तु को विस्तार देने के लिए इसके साथ–साथ अन्य भारतीय खेलों का परिचय व स्वरूप पर चर्चा की गई है। महाराष्ट्र प्रान्त के लातूर जिले की लातूर एवं जालकोट तहसील के 20 विद्यालय एवं 20 महाविद्यालय के खिलाड़ियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

**शोधविधि :-**

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है क्योंकि अनुसंधान की यह एक वैज्ञानिक विधि है। इस विधि द्वारा प्राप्त निष्कर्ष वैध एवं विश्वसनीय होते हैं।

**अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :-**

**मनोवृत्ति मापनी :–**

शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित मनोवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है।

**अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :-**

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी मध्यमान (M), प्रमाणिक विचलन (SD) एवं T. Value की गणना की जायेगी।

**समंकों का सारणीयन एवं विश्लेषण :-**

प्रस्तुत शोधकार्य में अनुसंधानकर्ता ने संकलित एवं व्यवस्थित आंकड़ों का विश्लेषण जिस प्रकार किया है, उसका परिकल्पनानुसार विवरण निम्न प्रकार है –

**सारणी संख्या – T.IV.1**

विद्यालयीन एवं महाविद्यालयी कबड्डी खिलाड़ियों की मनोवृत्ति के फलांको के सम्बन्ध में मध्यमान अन्तर की सार्थकता

| खिलाड़ी | संख्या (N) | माध्य (Mean) | मानक विचलन (S.D.) | टी–मान (T.Value) | सार्थकता स्तर | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | .05 | .01 |
| विद्यालयीन | 20 | 38.12 | 6.73 | 3.84 | | सार्थक अन्तर हैं। |
| महाविद्यालयीन | 20 | 36.87 | 6.12 | | | |

**($df=N_1+N_2$ &2=20+20&2=38)**

**विश्लेषण :-**

उपर्युक्त सारणी में गणना द्वारा प्राप्त मान तालिका मान से अधिक है। इस आधार पर परिकल्पना को अस्वीकृत किया जाता है। अर्थात् विद्यालयीन एवं महाविद्यालयी कबड्डी खिलाड़ियों की मनोवृत्ति में सार्थक अंतर है।

**प्रस्तुत अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता :-**

शारीरिक क्रिया कलापों के माध्यम से ही सामान्य एवं विशिष्ट शिक्षा सम्भव है। अतः आन्तरिक प्रवृत्तियों एवं भावनाओं को आत्म प्रकटन के द्वारा प्रकट करके किशोरों को अन्तर्द्वन्द्व से बचाया जा सकता है और उनका सर्वांगीण विकास सुचारू रूप से विकसित किया जा सकता है। यह सब कबड्डी जैसे खेलों के माध्यम से ही सम्भव है।

**हिन्दी संदर्भ साहित्य**


1. उपाध्याय, संतोष कुमार : 'शारीरिक शिक्षा का संगठन एवं प्रशासन' मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल। (1987)
2. कपिल एच. के. : 'अनुसंधान विधियां' हर प्रसाद भार्गव, कचहरी घाट, आगरा। (1992)
3. कपिल एच. के. : 'सांख्यिकी के मूलतत्व' हर प्रसाद भार्गव, कचहरी घाट आगरा। (1993)
4. कमलेश, एम. एल. : 'शारीरिक शिक्षा एवं खेल मनोविज्ञान' मेट्रो पोलियन बुक कं.प्रा.लि., नई दिल्ली। (1983)
5. कमलेश, एम.एल. : 'शारीरिक शिक्षा के तथ्य एवं आधार' पी.पी. पब्लिकेशन प्रा. लि., फरीदाबाद। (1983)
6. कमलेश, एम. एल. एवं : 'शारीरिक शिक्षा के सिद्धान्त एवं इतिहास' प्रकाश ब्रदर्स, संगराल, एम.एस. जालन्धर, लुधियाना। (1994)


RRIJM 2015, All Rights Reserved 